International Journal of Applied Research 2017; 3(4): 879-881

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(4): 879-881
www.allresearchjournal.com
Received: 03-02-2017
Accepted: 04-03-2017

मलखान सिंह
एम॰फिल्॰, राजनीतिक विज्ञान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत

Correspondence
आरती
एम॰फिल्॰, राजनीतिक विज्ञान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत

गांधी जी एक शान्ति राजदूत के रूप में

मलखान सिंह

प्रस्तावना

महात्मा गांधी जी एक आध्यात्मिक, आदर्शवादी, सन्त एवं महान् स्वतन्त्रता सेनानी तो थे ही साथ ही एक कर्मण्यवादी व्यक्ति भी थे। गांधी जी ने सदैव वस्तुस्थिति से यथार्थ को अपने दृष्टिकोण से देखा था और उस पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति की। यही कारण है कि गांधी जी कहते थे कि "मैं अपने पीछे कोई वाद नहीं छोड़ रहा हूं, ये तो मेरे विचार हैं, जिन्हें मैं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ और ये तो मेरे 'सत्य के साथ प्रयोग का अंश' है।

इतना ही नहीं वे कहते थे कि "सत्य के साथ प्रयोग : गांधी दर्शन" किसी वाद में बंधकर नहीं रह सकता क्योंकि वह तो सम्पूर्ण जीवन का सर्वांगीण विज्ञान है। महात्मा गांधी जो 20वीं शताब्दी के ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने स्वयं को विश्वसत्ता के साथ एकाकार कर दिया। यद्यपि उनका जन्म भारत में हुआ था, तथापि ईसा, बुद्ध, महावीर तथा मोहम्मद साहिब की तरह उन्होंने विश्व व्यक्तित्व के रूप में ख्याति प्राप्त की। [1]

दक्षिण अफ्रीका की राजनीतिः

गाँधी जी द्वारा आधुनिक सभ्यता की जो समीक्षा की गई है, उसका वास्तविक विकास भारत में नहीं अपितु दक्षिण अफ्रीका में हुआ था। गांधी ने भारत में नहीं बल्कि दक्षिण अफ्रीका में भारतीय राष्ट्रवाद का बिंब ग्रहण किया था। उनका राष्ट्रवाद स्थानीय प्रांतीय और राष्ट्रीय रूप लिए हुए नहीं था। वे मानते थे कि 'पहले मैं एक भारतीय हूँ फिर गुजराती और अंत में काठियावाड़ी हूं'। उनके राजनीतिक दर्शन और तकनीकों का विकास चंपारण, खेड़ा या बारदोली में नहीं बल्कि ट्रांसवाल में हुआ था। इस दृष्टिकोण से उनके दक्षिण अफ्रीका के अनुभव बहुत महत्त्वपूर्ण है। दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी द्वारा भारतीय श्रमिकों तथा व्यापारी विरोधी विधेयकों के विरोध में आंदोलन खड़े किए गए। सत्याग्रह आंदोलन की विभिन्न तकनीकों/तरीकों की खोज भी यही हुई। फीनिक्स आश्रम की स्थापना भी दक्षिण अफ्रीका में ही हुई। [2] दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ गुलामी का व्यवहार होता था, उसका गांधी जी को स्वयं अनुभव करना पड़ा। एक दिवस गांधी जी किसी आवश्यक कार्य से रात्रि के समय रेलगाड़ी से प्रिटोरिया जा रहे थे। उनके पास प्रथम श्रेणी का टिकट होने के बावजूद भी उनको प्रथम श्रेणी के डब्बे से बेइज्जती के साथ उनको वहां से उठ जाने के लिए कहा गया। गांधी जी की समझ में यह बात नहीं आई। उन्होंने वहां से उठ जाना स्वीकार न किया और इसके विरोध में वह वहीं पर बराबर बैठे रहे। इस पर रेलवे गार्ड ने आकर गांधी जी को जबरदस्ती बाहर निकाल दिया। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी ने अपने सुविख्यात 'सत्याग्रह' का सफल प्रयोग किया जो वहां 'अहिंसा की तलवार' से लड़े गए उस सफल संघर्ष ने गांधी को भारत के भावी नेता के रूप में अपनी भूमिका अदा करने की दक्षता प्रदान की। दक्षिण अफ्रीका में अहिंसात्मक आन्दोलन की जो तकनीक गांधी जी ने विकसित की, उसका भारत की आजादी की लड़ाई में सफल प्रयोग किया गया। [3]

सत्याग्रहः

सत्याग्रह शब्द मूल रूप से संस्कृत शब्द है। यह दो शब्दों सत्य और आग्रह के मिश्रण से बना है। जिसका अर्थ है सत्य के लिए आग्रह। दूसरे शब्दों में सत्य पर टिके रहना तथा सत्य की उपलब्धि हेतू दृढ़तापूर्वक लगे रहना, जमे रहना ही सत्याग्रह है। सत्याग्रह को परिभाषित करते हुए गांधी ने लिखा "सत्य प्रेमपूर्वक आग्रह की मांग करता है और इस प्रकार यह आग्रह ताकत के एक पर्यायवाची के रूप में बदल जाते हैं। यही कारण है कि मैंने भारतीय आंदोलन को निष्क्रिय प्रतिरोध के बजाय सत्याग्रह कहना शुरू किया,

जिसका आशय ऐसी ताकत से है जिसकी बुनियाद सत्य, प्रेम व अहिंसा के मजबूत खंबों पर टिकी है।" गांधी जी ने 'इण्डियन ओपिनियन' में सत्याग्रह हो एक पवित्र उद्देश्य हेतू दृढ़ता के रूप में रेखांकित किया है। यंग इण्डिया में इस बात की ओर संकेत करते हैं कि सत्याग्रह 'आत्म–दुःख भोग के सिद्धान्त का एक नवीन रूप भर है और हिन्द स्वराज में इस बात की घोषणा करते हैं कि "दूसरों के बलिदान की तुलना में आत्म बलिदान अनन्त गुना अधिक श्रेयस्कर है" तथा एक आत्म–बलिदानी यानी स्वदुःख भोगी अपनी गलतियों से दूसरों को कष्ट नहीं पहुंचाता है।" सत्याग्रह जो गांधी की सर्वोच्च आविष्कार खोज या कृति थी, सत्य के ऐसे अनवरत, व अविराम खोज की बात करता है, जहां हिंसा, घृणा, ईष्या, दंभ व द्वेष का कोई स्थान नहीं, उनकी अवधारणा का मतलब निष्क्रियता, दुर्बलता, निःसहायता या स्वार्थ परायणता नहीं था। वास्तव में यह मानवीय मस्तिष्क की ऐसी सोच तथा जीवन दर्शन को इंगित करता है, जिसकी बुनियाद पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति हेतू दृढ़ इच्छा, घृणा पर प्रेम के विजय के सिद्धांत पर असीम श्रद्धा, ह्रदय परिवर्तन हेतू स्वैच्छिक आत्म–दुखभोग तथा इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतू अहिंसक तथा न्यायपूर्ण तरीकों का धीरता तथा सक्रियता से इस्तेमाल पर टिकी थी। सत्याग्रह का अर्थ राजनीतिक तथा आर्थिक आधिपत्य के खिलाफ मानवीय आत्मा के शक्ति की दृढ़ता भी है क्योंकि अधिपत्य हमेशा अपने झूठ व स्वार्थ के लिए सत्य को खारिज करता है इसलिए सत्याग्रह मानवीय चेतना की सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। [4] गांधी अपने अब तक के राष्ट्रवादी साथियों से भिन्न हो गया। जब उन्होंने प्रेसीडेन्सी शहरों, जो अब तक राष्ट्रवादी गतिविधियों के केन्द्र रहे, के स्थान पर सूदूर क्षेत्रों जैसे चम्पारन (बिहार), खेड़ा और अहमदाबाद (गुजरात) में अपना सत्याग्रह आंदोलन प्रारम्भ किया। 1930 में गांधी जी द्वारा किए गए नमक सत्याग्रह के भाग के रूप में दाण्डी यात्रा का 2005 में बहुचर्चित पुनः क्रियान्वयन सम्भवतः समकालीन भारत में राजनीतिक गतिशीलता के लिए गांधी की अपनाई तकनीकों की प्रासंगिकता को सुझाता है। यह सत्य है कि रिचर्ड एटनबोरो की फिल्म गांधी ने सम्पूर्ण विश्व को लोकप्रिय बनाया। 1919 के रौलट विरोधी सत्याग्रह के बाद ही अहिंसा को गांधी ने सत्याग्रह के आवश्यक अंग के रूप में जोड़ा। जनता के अन्याय के विरूद्ध सहज प्रतिरोध पर विश्वास करने के कारण गांधी रौलट अधिनियम के विरूद्ध अभियान की सफलता के प्रति आश्वस्त थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 1919 का यह सत्याग्रह गांधी के राजनीतिक सिद्धांतों की दृष्टि से दो विशिष्ट रूप से महत्त्वपूर्ण था– ब्रिटिश विरोधी संघर्ष में लोगों के बढ़ते असन्तोष की सम्भावना को गांधी ने अब अनुभव किया और सत्याग्रह महात्मा के लिए एक निर्णायक परीक्षा भी थी। जो अब राजनीतिक गतिशीलता के लिए सत्याग्रह की तकनीक की सफलता के लिए आश्वस्त था। [5]

गांधी के दर्शन में सत्य एवं अहिंसाः

गांधी जी के विचारों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। ये है– गांधी जी का उद्देश्य, गांधी जी के सिद्धांत और गांधी जी के साधन/कुल मिलाकर गांधी जी के दो उद्देश्य थे– स्वराज्य और सर्वोदय। उनके सिद्धांतों में मुख्य थे। अहिंसा और सत्य पालन तथा श्रम की गरिमा। अन्त में गांधी जी के साधनों में सत्याग्रह को न केवल एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तकनीक समझा जाता है बल्कि शिक्षा की एक नई प्रणाली भी है। गांधी जी मानव–परिवर्तन चाहते थे और इस परिवर्तन के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधन था शिक्षा। [6] लेकिन गांधी के समस्त चिंतन के दो मूल आधारभूत सिद्धांत रहे हैं सत्य और अहिंसा। सत्य उनके लिए साध्य है तथा अहिंसा साधन। यदि सत्य गांधी के लिए समस्त नीतियों के परिचालन एवम् उनके अनुपालन का आधार है तो अहिंसा उसे पाने का रास्ता। सत्य और अहिंसा गांधी जी के सर्वोच्च सिद्धांत है। जो अपने आपमें अनेक सिद्धांतों को समेटे हुए है। तात्विक दृष्टकोण 'सत्य' शब्द की उत्पत्ति की व्याख्या करता है। सत्य शब्द संस्कृत के 'अस' धातु में 'शतृ' प्रत्यय (लटः शातृशान चाद प्रथमा समानाधिकरणे) लगाने से 'सत' शब्द बनता है और सत् शब्द में द्वितीय 'यत्' प्रत्यय लगाने से सत्य शब्द बनता है। सत् शब्द का अर्थ है 'होना' या अस्तित्व और सत्य का अर्थ है 'अस्तित्व से युक्त सत्य (म्) की व्युत्पत्ति असत्+शतृ से है, जिसको अर्थ है सत् यत् (सते–हित सत्यः) (सते+हितम्) सत्यम्। इस प्रकार सत्य का अर्थ अस्तित्व से है। सत्य वही है जिसका अस्तित्व है। संसार में केवल सत्य की ही सत्ता है, उसका ही अस्तित्व है, इसके अलावा कुछ भी नहीं है। गांधी के अनुसार जीवन की सार्थकता उसकी सरलता में है और सत्य मार्ग ही इसकी प्राप्ति का स्त्रोत है। जीवन के प्रत्येक छोटे–बड़े कार्यों में सत्य का ही पालन होना चाहिए। क्योंकि सत्य प्रेरित इन्हीं कार्यों की श्रृंखला ही व्यक्ति को सत्योन्मुखी बनाती है। धार्मिक दृष्टिकोण से विश्व के सभी धार्मिक ग्रन्थों में वेद–पुराणों में ऋषि–मुनियों के उवाचों में ईश्वर के अस्तित्व को ही स्वीकारा गया है। अतः यदि सत्य का अर्थ अस्तित्व है तो निश्चय ही सत्य का अर्थ ईश्वर से माना जा सकता है। ईश्वर से गांधी जी का तात्पर्य है एक ऐसा जीवित बल, चिरस्थायी ज्योति अथवा शक्ति है जो कभी नष्ट नहीं होती बल्कि नये रूपों में प्रकट होकर हमारे मार्ग को प्रकाशित करती है। गांधी जी ईश्वर को जीवन सत्य एवं ज्ञान का आधारभूत तत्व मानते है क्योंकि उनका मानना है कि सम्पूर्ण ईश्वर में ही निहित है। जीवन के सभी कार्य एवं सभी सिद्धांत ईश्वर के शाश्वत नियम से ही नियन्त्रित एवं नियमित है। सत्यान्वेषण, सत्यानुपालन एवं अन्ततः परम सत्य की सर्वोच्चय प्राप्ति यदि एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था का एक मात्र सर्वोपरि लक्ष्य है तो अहिंसा इस सत्यप्राप्ति का एकमात्र साधन है। यही कारण है कि गांधी जी सत्य एवं अहिंसा को एक ही सिक्के के दो पहलू कहते थे। गांधी जी के अनुसार उच्च एवं आदर्श लक्ष्य की प्राप्ति तभी अर्थपूर्ण एवं कल्याणकारी है जबकि साधन भी पवित्र हो। अहिंसा को रोमाँ रोला ने अनन्त धैर्य और असीम प्रेम की संज्ञा दी है। [7] अहिंसा का अर्थ कायरता नहीं है बल्कि शूरवीरता है, यह बात गांधी जी ने न केवल बार–बार कही थी, बल्कि इसे अपने आचरण द्वारा भी सिद्ध कर दिखाया था । यंग इण्डिया (11.8.1920) में उन्होंने लिखा "मेरा यह निश्चित विश्वास है कि जहां चुनाव सिर्फ कायरता और हिंसा के बीच करना हो वहां मैं हिंसा को चुनने की सलाह दूंगा। गांधी जी की अहिंसा में कायरता का कोई स्थान नहीं था। [8] अहिंसा का भावात्मक अर्थ है– प्रेम। मानव के अंदर प्रेम एक दैवीय नियम है जो कार्य बड़े–बड़े तर्क से नहीं हो सकता। वह सहज प्रेम के द्वारा ही हो सकता है। समाज–सेवा के मूल में भी प्रेम है। प्रेम भावना के कारण हमारा कर्त्तव्य पालन भी आनंदमय हो जाता है। गांधी जी के अनुसार प्रेम का नियम ही प्रकृति का नियम है। यहां अहिंसा ईसाई धर्म के "लव" के बहुत ही करीब है किंतु अहिंसा "लव" से कहीं ज्यादा व्यापक हो। ईसाई धर्म में "लव दाय नेबर" कहा गया है। इसका अर्थ है "पड़ोसी को प्रेम करना।" इसका बृहद अर्थ ले तो "मानव मात्र को प्रेम करना" है। गांधी की अहिंसा ईसाई धर्म के "लव" से कहीं ज्यादा व्यापक है क्योंकि इसमें मानव के अतिरिक्त सभी जीवों के प्रति प्रेम की बात कही गई है। [9]

निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि महात्मा गांधी जी 'गांधीवादी' विचारधारा विश्व में प्रसिद्ध है। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में भेदभाव के खिलाफ सफल सत्याग्रह आंदोलन किया था। गांधी जी का सत्य और अहिंसा सिद्धांत वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है। इसका उदाहरण वर्ष 2012 में हन्ना हजारे के द्वारा भ्रष्टाचार के विरूद्ध लोकपाल बिल को पास करवाने के लिए सरकार पर

अहिंसात्मक आंदोलन के द्वारा देखा जा सकता है। अतः गांधी जी की प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी देखी जा सकती है।

संदर्भः

1. डॉ॰ के॰ एस॰ सक्सेना और डॉ॰ गीता अग्रवाल, 'गांधी : धर्म एवं लोकतन्त्र' सनलाइम पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2005, पृ॰ 9–19
2. मनोज सिन्हा, 'गांधी अध्ययन', ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2010, पृ॰ 55
3. मनोज कुमार और रवि रंजन, 'महात्मा गांधी', कल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृ॰ 4–6
4. डॉ॰ सुरजीत कौर जौली, 'गांधी एक अध्ययन', कन्सैट पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2007, पृ॰ 132–133
5. विद्युत चक्रवर्ती और राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन विचार व संदर्भ', रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2012, पृ॰ 56–64
6. के॰ डी॰ गंगाराडे, 'गांधी जी के शिक्षा सम्बन्धी क्रान्तिकारी विचार', गांधी स्मृति एवं दर्शन स्मृति, नई दिल्ली, 2000, पृ॰ 15–16
7. उपासना पाण्डेय, 'उत्तर आधुनिकतावाद और गांधी', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2007, पृ॰ 198–211
8. पुषराज, 'सनातन धर्म और महात्मा गांधी', श्रीविनायक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994, पृ॰ 184
9. रमेशचन्द्र सिन्हा, 'समकालीन भारतीय चिंतक', डी॰ के॰ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ॰ 117